International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 10, Oct 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

'मुण्डारी भाषा साहित्य के समृद्धि में मुंडा विद्वानों का योगदान''

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा'
सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची वि. वि. राँची।

ऑस्ट्रिक वं''ा के मुंडा कुल की मुण्डारी भाषा प्राचीनता की गौरवगाथा के साथ हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, सिन्धु नदी घाटी सभ्यता के निर्माता रहे हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से पाषाणकालीन सभ्यता, ऑस्ट्रिक वर्ग के मुण्डाओं की देन है। मुंडा समुदाय और मुण्डारी भाषा का प्राचीनतम और गौरव''ाली इतिहास है। मौखिक और कंठ में सुरक्षित मुण्डारी भाषा में इतिहास, भूगोल, शासन प्र''ासन, समाज, संस्कृति, आर्थिक, धर्म द''ान यानी जीवन यापन के सभी तत्व मौजूद है। प्राचीनकाल में यह स''ाक्त रूप में थी। वर्त्तमान में भी शहरों को छोड़कर ज्यादा प्रभावित नहीं हुआ है।

मौखिक से ि''ाष्ट साहित्य देने का आरम्भ लगभग 1830 ई0 है। तमाड़ राजदरबार में गायक के रूप में कार्यरत गौर सिंह ि''ाखर के पुत्र बुधनाथ ि''ाखर के मुण्डारी गीतों की रचना से आरभ्भ होता है। गीतों का विषय रामायण एवं महाभारत के पात्रों का चरित्र चित्रण। गीतों से प्रसिद्धि के कारण बुधनाथ ि''ाखर से बुदुबाबु हुए।

1844–45 ई0 के आस–पास छोटानागपुर, वर्त्तमान झारखण्ड में अंग्रेज ईसाई मि''ानरियों का आगमन हुआ। 1851 में पहली बार दो मुंडा व्यक्ति ने ईसाई धर्म को अपनाया। मंगता मुंडा और बान्दया मुंडा, दोनों का नाम परिवर्तित कर ख्रीस्तानन्द और ई''वरदत्त रखा गया। ि''ाक्षा, चिकित्सा, सेवा और धर्म प्रचार हेतु काफी कार्य किये गये। मुण्डारी भाषा का गहन अध्ययन किया गया। बइबल का अनुवाद मुण्डारी में किया गया। '' मुण्डारी ग्रामर एण्ड एक्सरसाइज'' पुस्तक निर्मित हुई। प्रचार के विभिन्न माध्यमों में मुण्डारी भाषा को शामिल किया गया। मुण्डारी भाषा ि''ाष्ट रूप में परिणत होने लगी। फा. जॉन हॉफमैन के अगुवाई में ''इन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका'' वृहत्त को''ा का निर्माण हुआ। इस कार्य में मुण्डा समुदाय के लोग काफी मदद किये। बुरमा गाँव के मेनस ओड़ेया रूफूस होरो, मुरहू, सहदेव चुटिया पुर्त्ती – ओटोंगा गाँव, दानियल और जोसेफ लोंकाटा गाँव के, ये सभी इन्साक्लोपीडिया मुण्डारिका वृहत्त शब्दको''ा निर्माण के अग्रणी सहयोगी थे। मुण्डारी शब्दों का संकलन, उसका व्यवहारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उपयोग पर वृहत्त ज्ञान एकत्रित किया गया।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

उन दिनों एक तरफ सरदारों का संघर्ष चल रहा था, दूसरी ओर आकर्षण, प्रलोभन, बेदखल आदि का प्रभाव।

1857 में बिरसा मुण्डा का जन्म हुआ। युवावस्था तक सभी ज्ञान प्राप्त किये। बिरसा से दाउद बना अधिक दिनों तक रास नहीं आया। बिरसा मुण्डा बने रहना स्वीकार किया।

उन दिनों मेनस ओड़ेया जागरूक और ि"ाक्षित व्यक्ति थे। साहित्य की रचना करते थे। मेनस ओड़ेया ने ''सिड.बोंगा ओड़ोः एटाः एटाः बोंगा को'' पुस्तक रचना किये। 'मतुराअ कानि'' वृहत्त मुण्डारी उपन्यास की रचना मुण्डारी भाषा में किये।

1947 ई0 के बाद मुण्डा समुदाय के कई रचनाकार उभरे। साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागार करने लगे। स्वतंत्रता सेनानी स्व. भइयाराम मुंडा ने ''दंड़ा जमाकन होड़ो कानि को'' पुस्तक प्रकाि"ात किये। ''बांसुरी बज रही'', मुण्डा लोककथाएं'' पुस्तक, जगदी"ा त्रिगुणायत के नेतृत्व में मुण्डा समुदाय के जागरूक व्यक्तियों के सहयोग से निर्मित हुआ। प्रमुख नाम ये हैं– भइयाराम मुण्डा, मानकी सिंहराज सिंह, बलदेव मुण्डा, मानकी जूरन सिंह, मरकस होरो, राम सिंह मुण्डा, हाथी राम मुण्डा, कुंजल सिंह टुटी, साउ मुण्डरी, खुदिया पाहन, दुलायचन्द्र मुण्डा, दसाय पुर्ती, गोमेश्री मानकी, बलिराम नाग, सुन्दर सिंह हस्सा, कान्डे मुण्डा, एतवारी देवी, सुनन्दा देवी, मुचिराय मुण्डा, बेंजामिन डांगवार, चमरा मुण्डा, रामदयाल मुण्डा, कड़िया सारू, बिनोद बरय नाग, लेमसा टुटी, सोहराई मुण्डा, भीमसिंह मुण्डा, बाघराय मुण्डा, रामे"वर मांझी, हरिसिंह मुण्डा, लेंगा टुटी, रामदी मुन्डू, रूपचन्द मुण्डा, अहिल्या कुमारी, उषा कुमारी आदि थे। इनमें से अधिकां"ा लोग स्वर्गवासी हो गये। मुण्डारी साहित्य का धरोहर बना गये।

मुण्डा समुदाय के रचनाकार, लेखक एवं उनकी कृतियाँ निम्न हैं –

बि"ाप स. अ. वि. दि. हंस – होड़ो जगर रेआ एतेहइसि नड.नम ओड़ोः हरा रनकब

सागु हंस मुण्डा – मुण्डा कोआ इतिहास

दाउद दयाल सिंह होरो – सुरूद सलुकिद

दुलायचन्द्र मुण्डा – बम्बरू, सुड़ा सांगेन

डॉ0 रामदयाल मुण्डा – सेलेद, एआ नवाकानि को, मुण्डारी पाठ, मुण्डारी व्याकरण, आदि धरम, प्रीतपाला एवं रामायणपाला, हिसिर

डॉ0 मनमसीह मुन्डू – टुड.कोढारि, मुण्डारी संक्षिप्त व्याकरण,

का"ीनाथ सिंह मुण्डा – सासांग बा, गुइरम

पी. एन. जे पुर्ती – होड़ो कोआ कुर्सीनामा ओड़ोः किलिको

निकोदिम केरकेट्टा – कुदुम, बइअंकिर

निरमल सोय – होड़ो जगर इतुन पुथि

बलदेव मुण्डा – चंगा दुरड.

सुलेमान बडिग – नइमिअद किमिनते रूत

डॉ0 मनसिद्ध बड़ायउद्ध – नवा होड़ो जगर मुंडि, मुण्डा जोनोका ओड़ोः कजि जुगुतु

मंगल सिंह मुण्डा – रंगा चौडल रेन पुतुल, कामिनाला, कॉलेज गेट, हड़द सुकु

वि"ा लकड़ा – अञ मसकल

नवीन मुन्डू – गेल बर कानि को, मुण्डारी सीखें
गन्दुरा मुण्डा – सोंगोति
डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय – सेंडा दुवार, नवा मुंडा कानि को'' मुण्डारी भाषा ज्ञान विज्ञान, मुण्डारी जगर सहिति रेआ उबर, मुण्डारी भाषा व्याकरण और साहित्य, मुण्डारी आनायुम सहिति''
जुसब कन्डुलना – मुण्डा कोआ ससंकिर
जवरा मुण्डा – करम दुरड.
लगनी हेरेंज – मसकल साः
सिलास हेम्ब्रोम – ओनोरोड. अद सनड.

मुण्डारी पुस्तकों के अलावे मुण्डारी पत्र पत्रिकाएँ भी प्रचलित हैं। 60 से 80 के द''ाक में कई विद्वानगण, चिंतकगण, राजनीतिज्ञों ने साहित्य के विकास हेतु कार्य किये। प्रमुख रूप से ''जगर साड़ा, सम्पादक – सु''ाील कुमार बागे,
सरना सकम, सम्पादक – भइयाराम मुण्डा,
सम्पड़तिड., सम्पादक – स. अ. वि. दि. हंस
मरसल, सम्पादक – एन. ई. होरो
सेंड़ा सेतेंग, सम्पादक – नवीन मुन्डू
संगोम, सम्पादक – डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय।

मुण्डारी भाषा साहित्य को वर्त्तमान परिस्थिति में संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रोत्साहन की आव''यकता है। समाज के सर्वांगीण विकास में भाषा साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।

सन्र्दभ

डॉ0 रामदयाल मुण्डा – मुण्डारी पाठ, हिसिर स.अ. वि. दि. हंस – होड़ो जगर रेआ एतेहइसि नड.नम ओड़ोः हरा रनकब डॉ0 मनमसीह मुन्डू – टुड.कोढारि जगदी''ा त्रिगुणायत – बांसुरी बज रही
मेनस ओड़ेया – मतुराअ कहनि
फा. जॉन हॉफमैन – द मुण्डा वर्ल्ड
डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय – मुण्डारी जगर सहिति रेआ उबर